चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	26.02.25	4	3-6

बदलते जलवायु के अनुसार कीट प्रबंधन पर करें कार्य

जागरण संवाददाता • हिसार : बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रामकता में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स के समापन समरोह में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर आफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत सात राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

हकृवि में मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज प्रतिभागियों के साथ • पीआरओ

उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए फसल विविधीकरण, नवाचार, नवीनतम तकनीकों के उपयोग बारे किसानों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। किसानों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ सावधानी पूर्वक कीट प्रबंधन कार्यक्रम को अपनाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उपज में बदलाव आ रहा है। इसकी वजह से भविष्य में कीटों की समस्या बढ़ सकती है जोकि पौध वैज्ञानिकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डा. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और ट्रेनिंग कोर्स की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला। प्रशिक्षण के संयोजक डा. एसएस यादव ने आभार व्यक्त किया। मंच का संचालन डा. कृष्णा रोलानिया ने किया। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य और डा. दिलीप कुमार मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	26.02.25	6	6-8

एचएयू के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करें कार्य : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के समापन पर जीजेयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट- प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृतिक खेती, कीटनाशकों एवं रसायनों का सीमित मात्रा में प्रयोग करने बारे विस्तार से जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. एस. एस. यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का धन्यवाद किया। ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिलीप कुमार, कृषि महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	26-02-25	2	3-6

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करे कार्यः प्रो.काम्बोज

मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

हिसार, 25 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रमकता में बढ़ौतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उपज में बदलाव आ रहा है। इसकी वजह से भविष्य में कीटों की समस्या बढ़ सकती है जोकि पौध वैज्ञानिकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

उन्होंने कहा कि जागरूकता के अभाव में किसान बिना वैज्ञानिक सलाह के फसलों में अंधाधुंध कीटनाशकों व रसायनों का मिश्रित छिड़काव कर रहे हैं जो बहुत ही नुकसानदायक साबित हो रहा है। उन्होंने वैज्ञानिकों से सेंसर के द्वारा कीट प्रबंधन पर अनुसंधान करने पर जोर दिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृतिक खेती, कीटनाशकों एवं रसायनों का सीमित मात्रा में प्रयोग करने बारे विस्तार से जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और ट्रेनिंग कोर्स की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	26.02.25	5	6-8

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करें कार्य : प्रो. काम्बोज

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

हिसार, 25 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रामकता में बढ़ौतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए फसल विविधीकरण, नवाचार, नवीनतम तकनीकों के उपयोग बारे किसानों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। किसानों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ सावधानी पूर्वक कीट प्रबंधन कार्यक्रम को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जागरूकता के अभाव में किसान बिना

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में रिफ्रेशर कोर्स सम्पन्न

वैज्ञानिक सलाह के फसलों में अंधाधुंध कीटनाशकों व रसायनों का मिश्रित छिड़काव कर रहे हैं जो बहुत ही नुकसानदायक साबित हो रहा है। इससे न केवल पर्यावरण पर बल्कि फसलों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, जिससे किसानों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। उन्होंने वैज्ञानिकों से सेंसर के द्वारा कीट प्रबंधन पर अनुसंधान करने पर जोर दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृतिक खेती, कीटनाशकों एवं रसायनों का सीमित मात्रा में प्रयोग करने बारे विस्तार से जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और ट्रेनिंग कोर्स की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला। प्रशिक्षण संयोजक डॉ एस. एस. यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का धन्यवाद किया जबकि मंच का संचालन डॉ. कृष्णा रोलानिया ने किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिलीप कुमार, कृषि महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	26.02.25	12	2-4

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करें काम : प्रो. काम्बोज

- हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। प्रतिभागियों के साथ मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आर्द्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रामकता में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	25.02.25	--	--

वैज्ञानिक जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करें कार्य : प्रो. काम्बोज

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियों उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रमकता में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए फसल विविधीकरण, नवाचार, नवीनतम तकनीकों के उपयोग बारे किसानों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। किसानों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ सावधानी पूर्वक कीट प्रबंधन कार्यक्रम को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से सेंसर के द्वारा कीट प्रबंधन पर अनुसंधान करने पर जोर दिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृतिक खेती, कीटनाशकों एवं रसायनों का सीमित मात्रा में प्रयोग करने बारे विस्तार से जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और ट्रेनिंग कोर्स की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण संयोजक डॉ एस. एस. यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का धन्यवाद किया जबकि मंच का संचालन डॉ. कृष्णा रोलानिया ने किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिलीप कुमार, विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	26.02.25	--	--

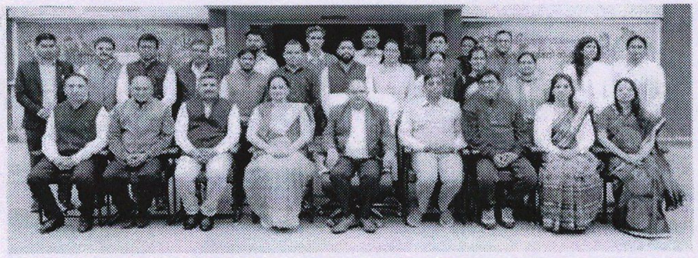

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करे कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियों उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रामकता में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए फसल विविधीकरण, नवाचार, नवीनतम तकनीकों के उपयोग बारे किसानों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। किसानों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ सावधानी पूर्वक कीट प्रबंधन कार्यक्रम को अपनाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उपज में बदलाव आ रहा है। इसकी वजह से भविष्य में कीटों की समस्या बढ़ सकती है जोकि पौध वैज्ञानिकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि जागरूकता के अभाव में किसान बिना वैज्ञानिक सलाह के फसलों में अंधाधुंध कीटनाशकों व रसायनों का मिश्रित छिड ?ाव कर रहे हैं जो बहुत ही नुकसानदायक साबित हो रहा है। इससे न केवल पर्यावरण पर बल्कि फसलों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, जिससे किसानों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। उन्होंने वैज्ञानिकों से सेंसर के द्वारा कीट प्रबंधन पर अनुसंधान करने पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे	25.02.25	--	--

वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिदृश्य के अनुसार कीट प्रबंधन पर करे कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज

- हकृवि के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न

हिसार टुडे । हिसार

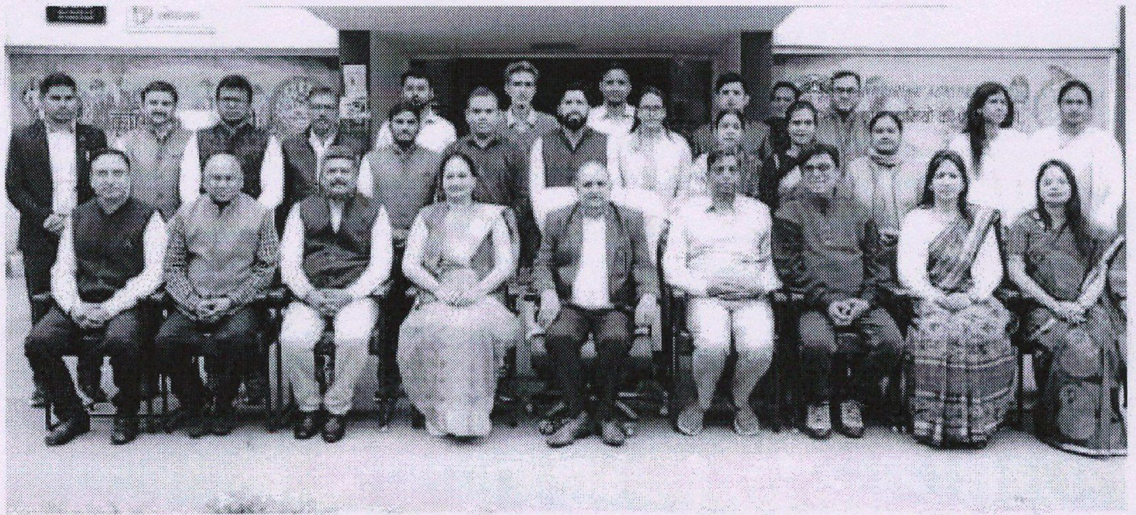

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थाई कृषि के लिए बदलते जलवायु परिदृश्य में कीट प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। कीट विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग के अंतर्गत 7 राज्यों से विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते जलवायु परिदृश्य के कारण कृषि क्षेत्र में नई और जटिल चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, जिनमें कीट संक्रमण की बढ़ती घटनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित पैटर्न और आद्रता में बदलाव से कीटों के जीवन चक्र और उनकी आक्रामकता में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सतत कृषि और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए प्रभावी कीट प्रबंधन अत्यंतआवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए फसल विविधीकरण, नवाचार, नवीनतम तकनीकों के उपयोग बारे किसानों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। किसानों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ सावधानी पूर्वक कीट प्रबंधन कार्यक्रम को अपनाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उपज में बदलाव आ रहा है। इसकी वजह से भविष्य में कीटों की समस्या बढ़ सकती है जोकि पौध वैज्ञानिकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि जागरूकता के अभाव में किसान बिना वैज्ञानिक सलाह के फसलों में अंधाधुंध कीटनाशकों व रसायनों का मिश्रित छिड़काव कर रहे हैं जो बहुत ही नुकसानदायक साबित हो रहा है। इससे न केवल पर्यावरण पर बल्कि फसलों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, जिससे किसानों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। उन्होंने वैज्ञानिकों से सेंसर के द्वारा कीट प्रबंधन पर अनुसंधान करने पर जोर दिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृतिक खेती, कीटनाशकों एवं रसायनों का सीमित मात्रा में प्रयोग करने बारे विस्तार से जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और ट्रेनिंग कोर्स की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला। प्रशिक्षण संयोजक डॉ एस. एस. यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का धन्यवाद किया जबकि मंच का संचालन डॉ. कृष्णा रोलानिया ने किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिलीप कुमार, कृषि महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.2.25	2	6-8

गेहूं की पछेती किस्मों को तीसरा पानी लगाएं

बात खेती की

अप्रैल में गेहूं की कटाई भी शुरू होगी और किसान अभी सिंचाई की तैयारी कर रहा है। फसल पकने के लिए पानी की जरूरत है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं विशेषज्ञ डा. ओपी बिश्नोई ने पछेती किस्मों में तीसरा पानी लगाने की सलाह दी है। साथ ही जौ की फसल में भी दूसरी बार सिंचाई करना उचित बताया है।

डा. ओपी बिश्नोई ने सुझाव दिया है कि फसलों में गेहूं की पछेती किस्म में यदि नाइट्रोजन वाली खाद की कोई मात्रा शेष रह गई हो तो इसे पानी के साथ डाल दें। तापमान में गिरावट, लगातार बादल या धुंध छाए रहने से प्रायः गेहूं की पछेती फसल में जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई दे सकते हैं। 25-30 दिन की फसल पर नीचे की दो पत्तियों को छोड़कर अन्य पत्तियों का हरा रंग उड़कर हल्का होना शुरू हो जाता है। कई बार नई पत्तियां अत्यंत पतली एवं नुकीली दिखाई देती हैं। पौधे की गांठों के बीच की दूरी घट जाती है। बढ़वार कम हो जाती है, फसल में बालियां देर से आती हैं तथा बालियों में दानों की संख्या कम बनती है।

गेहूं की बालियों में दाना पकने लगा है। तस्वीर तोशाम रोड के साथ लगते खेतों की है • जागरण

जस्ते की कमी तुरंत दूर करने को जिंक सल्फेट का छिड़काव करें

खड़ी फसल में जस्ते की कमी तुरंत दूर करने के लिए जिंक सल्फेट का छिड़काव करें। एक एकड़ फसल पर छिड़कने के लिए मानवचालित पंप से 200 लीटर घोल की आवश्यकता होगी। इसके लिए 1.0 किलोग्राम जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) लगेगा। जिंक सल्फेट की तासीर तेजाबी होती है। अतः इसे उदासीन करने के लिए 0.25 प्रतिशत चूने का घोल या 2.5 प्रतिशत यूरिया का घोल (200 लीटर पानी के लिए 5 किलोग्राम) प्रयोग करना चाहिए। इकट्ठा घोल बनाने से पहले जिंक सल्फेट तथा चूना या यूरिया का घोल 9-10 लीटर पानी में अलग-अलग बना लेना चाहिए। फिर बारीक कपड़े से छानकर दोनों घोलों को मिलाकर घोल की पूरी मात्रा (200 लीटर) बना लें। 15-15 दिन के अंतर पर दो छिड़काव करें। यदि किसी कारणवश छिड़काव से फसल गल जाए तो फसल को पानी लगा दें। यदि जमीन में पर्याप्त नमी है तो पानी लगाने की आवश्यकता नहीं। एक सप्ताह में फसल स्वयं ठीक हो जाएगी।

प्रस्तुति: हिसार से अमित धवन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.2.25	4	7-8

फल उत्पादन • प्रति बेल 25-30 ग्राम यूरिया डालें

बढ़ते तापमान में अंगूर को सूंडी व लाल धब्बे वाली बीमारी से बचाएं

यशपाल सिंह | हिसार

मार्च की शुरुआत से ही मौसम में काफी परिवर्तन होता है। बढ़ता तापमान बढ़ने और तेज हवाएं अंगूर के फलों को काफी नुकसान पहुंचा सकती हैं। इसलिए फल उत्पादकों द्वारा समय पर सिंचाई करना, छोटे-छोटे फलों को गिरने से रोकना, घने लगे हुए फलों को छिद्रा करना आदि बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के अनुसार अंगूर के नए लगाए बाग में 25-30 ग्राम यूरिया प्रति बेल दूसरे सप्ताह डालें और सिंचाई करें। मुख्य तने व पत्तियों के बीच से निकलने वाली टहनियों को तोड़ते रहें। बेलों के सीधा बढ़ने के लिए सीढ़ियों या बांस का सहारा दें। पांच साल से ऊपर के फल दे रहे पौधों में 340 ग्राम यूरिया व 500 ग्राम पोटाशियम सल्फेट डालें और गुड़ाई करके सिंचाई करें। 15 अप्रैल के बाद सिंचाई हर सप्ताह करनी आवश्यक है। बीज रहित अंगूर की किस्मों से अधिक उपज लेने के लिए पूरी तरह फूल आ जाने की हालत में 20 पीपीएम यानि 20 किलोग्राम प्रति लीटर, जीए व फल लगते समय 40 पीपीएम यानि 40 किलोग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें।

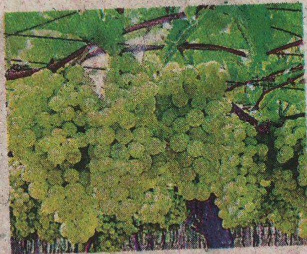

भूरे रंग के कीड़ों से बचाव को बाविस्टीन का छिड़काव करें

अंगूर की नई कोपलों को भूरे रंग के कीड़े भारी क्षति पहुंचाते हैं। ये कीड़े पत्तों की नसों के साथ-साथ चलते हैं व पत्तों की निचली सतह को कुरेद कर रस चूसते हैं। इनकी रोकथाम के लिए 150 मिली फेनवेलरेट 20 ईसी या 500 मिली मैलाथियान 50 ईसी को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ बेलों पर छिड़कें। कई बार बालों वाली सूंडियां अंगूर की बेलों, पत्तों और फलों पर भी आक्रमण करती हैं। लाल धब्बे वाली बीमारी के नियंत्रण के लिए बाविस्टीन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।